Class- B.A -1 (political science honours)
Paper,-1
Name of the guest teacher- Khushbu kumari
(department of political
science,V.S.J.college, Rajnagar,
Madhubani,lnmu)

Scanned with CamScanner

Lecture -2

Topic - शक्ति (स्रोत,प्रकार,प्रयोग एवं शक्ति की सीमाएं)

शक्ति के अर्थ को पूर्ण रूप से समझने के लिए उसके स्रोतों का अध्ययन करना आवश्यक होता है। शक्ति अनेक स्रोतों से उत्पन्न होकर विभिन्न रूपों में अपने आप को प्रकट करती है शक्ति के स्रोतों की पूर्ण सूची देना संभव नहीं है क्योंकि विभिन्न विद्वानों में इस संबंध में बहुत अधिक मतभेद है फिर भी शक्ति के कुछ स्रोतों का उल्लेख निम्नलिखित है

1. ज्ञान - शक्ति का प्रथम स्रोत ज्ञान होता है ।ज्ञान अपने साधारण अर्थ में व्यक्ति को अपने लक्ष्य को पुनः प्रबंधित करने और मिलाने की योग्यता प्रदान करता है। ज्ञान द्वारा व्यक्ति की अन्य विशेषताओं को इस प्रकार संचालित किया जाता है कि वह शक्ति का साधन बन सके ।व्यक्ति के नेतृत्व का गुण, उसकी इच्छाशक्ति ,उसकी सहनशक्ति ,अपने आप को अभिव्यक्त करने की शक्ति, आदि विभिन्न तत्व शक्ति के महत्वपूर्ण पहलू है।

2. संगठन - संगठन शक्ति का एक महत्वपूर्ण स्रोत होता है ।कहा भी गया है कि संगठन ही शक्ति है।विभिन्न इकाइयों आपस में मिलकर संघ बनाती है तो उसकी शक्ति कई गुना बढ़ जाती है ।आधुनिक युग में कई प्रकार के संघ एवं संगठन बने हैं जो कि शक्ति का उदाहरण देते हैं। जैसे कि मजदूर संघ ,व्यापारिक संघ आदि। शक्ति की दृष्टि से सबसे बड़ा संघ स्पष्ट रूप में राज्य ही है और इसका एक प्रमुख कारण राज्य का सर्वाधिक संगठित स्वरूप ही है।

3. आकार - कहा जाता है कि एक संगठन का जितना बड़ा आकार होगा उसके द्वारा उतनी ही अधिक शक्ति का परिचय दिया जा सकेगा। आकार के साथ यदि संगठन का मेल हो तो ऐसा होता भी है लेकिन सभी परिस्थितियों में ऐसा नहीं होता। अनेक बार ऐसा भी होता है कि उसका बड़ा आकार उसे उलझा दे, उसे असंतुलित बना दे और उसे परिस्थितियों के अनुकूल न रहने दे।

4. उपलब्धियां - शक्ति को निर्धारित करने वाले कई बाहरी तत्व भी होते हैं। इनमें मानव द्वारा प्राप्त की गई उपलब्धियां भी शक्ति का स्वरूप निर्धारित करती है। उपलब्धियों के अंतर्गत भौतिक सामग्री, स्वामित्व एवं सामाजिक सामग्री की शक्ति, एक व्यक्ति को समाज में प्राप्त स्थिति और स्तर आदि को सम्मिलित किया जा सकता है।

5. सत्ता - सत्ता भी शक्ति का एक स्रोत होती है। एक सत्ताधारी जिस पद पर होता है उस पद को प्राप्त होने वाली सारी शक्तियां उस व्यक्ति के पास होती है ।लेकिन यह शक्ति तभी तक उसके पास रहती है जब तक वह उस पद पर रहता है इसके साथ ही वह सत्ताधारी अपनी शक्तियों का प्रयोग संविधान एवं कानून के दायरे में रहकर ही कर सकता है।

Scanned with CamScanner

शक्ति के प्रकार -

शक्ति के प्रकार के संबंध में सभी विद्वान एकमत नहीं है। अलग-अलग विद्वानों ने अपने अपने तरीके से इसके प्रकार को बताया है।

1. व्यवहार में परिवर्तन के धारणा के अनुसार शक्ति तीन प्रकार की होती है - बल,प्रभुत्व और चातुर्य।

जब शक्तिवान व्यक्ति अपने अधीनस्थ व्यक्तियों के व्यवहार को भौतिक शक्ति के माध्यम से प्रभावित करता है तब इस प्रकार के शक्ति प्रयोग को बल कहा जाता है। जब शक्तिवान व्यक्ति अपनी इच्छा को प्रकट कर दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करता है तब वह प्रभुत्व कहलाता है। प्रभुत्व आदेश या आग्रह के रूप में हो सकता है। चातुर्य दूसरों के व्यवहार को प्रभावित करने का तरीका है जिसमें प्रभावित होने वाले व्यक्तियों को स्पष्ट रूप से यह नहीं बताया जाता है कि शक्तिवान व्यक्ति आखिर उनसे क्या चाहता है। इस अंतिम प्रक्रिया में विभिन्न तरीकों और प्रतीकों का प्रयोग करते हुए प्रचार की प्रणाली को अपनाया जाता है।

2. मैक्स वेबर ने औचित्य पूर्णता के आधार पर शक्ति के तीन प्रकार बताए हैं पहला कानूनी या वैधानिक दूसरा परंपरागत और तीसरा करिश्मावादी।

जब अधीनस्थ लोग शक्तिमान व्यक्तियों द्वारा निर्मित कानूनों एवं निर्देशों की वैधानिकता में विश्वास करते हैं तो यह औचित्यपूर्ण शक्ति वैधानिक कहलाती है। जब शक्ति वान व्यक्ति द्वारा प्रसारित आदेशों को परंपरा के आधार पर पवित्र माना जाए तो इससे परंपरागत शक्ति कहा जाता है ।और जब औचित्य की मान्यता का आधार शक्तिवान के व्यक्तिगत गुणों के प्रति भक्ति होती है तो वह करिश्मा वादी शक्ति कही जाती है ।करिश्मा वादी शक्ति के अंतर्गत अनुयायियों को अपने नेता की विशेषताएं अद्वितीय प्रतीत होती हैं और वह उनके सामने पूर्ण रूप से समर्पित हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

3. बायरस्टेड ने शक्ति के अनेक आधारों पर कई प्रकार बताए हैं -1. दृश्यता के आधार पर शक्ति अदृश्य प्रकट हो सकती है शक्ति के अदृश्य रूप को प्रचंड शक्ति कहा जाएगा तथा उसके प्रकट रूप को सत्ता बल आदि कहा जाता है।

2. दमन की दृष्टि से शक्ति दमनात्मक या दमनात्मक हो सकती है।

3. औपचारिकता की दृष्टि से शक्ति औपचारिक तथा अनौपचारिक हो सकती है।

शक्ति प्रवाह या दिशा की दृष्टि से वह एकपक्षीय, द्विपक्षीय, बहुपक्षीय हो सकती है। केंद्रीकरण के दृष्टिकोण से वह केंद्रित, विकेंद्रित या विस्तृत हो सकती है। केंद्रीय में केंद्रीय सत्ता का नियंत्रण होता है ,विकेंद्रित होने पर शक्तियां अनेक अधीनस्थ निकायों को स्वायत्त या अर्ध स्वायत्त आधारों पर प्रदान की जाती है। विस्तृत शक्ति का स्वरूप बिखरा हुआ एवं अस्पष्ट होता है। क्षेत्रीयता के आधार पर वह अंतरराष्ट्रीय या राष्ट्रीय हो सकती है। शक्ति की मात्रा एवं प्रभाव की दृष्टि से विभिन्न राज्यों को महान मध्यम तथा निम्न शक्तियां कहा जाता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि शक्ति का कोई एक नहीं बल्कि अनेक प्रकार होते हैं।

शक्ति का प्रयोग एवं सीमाएं -

शक्ति का प्रयोग विभिन्न प्रकार के साधनों के आधार पर किया जाता है- जैसे पुरस्कार देना ,दंड देना, आर्थिक लाभ देना या रोकना इत्यादि ।इन साधनों की मात्रा एवं प्रकार देश ,काल तथा संस्कृति विशेष के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। शक्ति का प्रयोग करते हुए जेल, जुर्माना, अपदस्थ करना या अपमान इनमें से किसी भी साधन को अपनाया जा सकता है ।इसी प्रकार संस्था पर शक्ति का प्रयोग करते हुए धमकी या लोभ में से किसी को भी चुना जा सकता है ।इनमें से एक साधन के असफल रहने पर दूसरे साधन को अपनाया जा सकता है। सामान्य रूप में शक्ति प्रयोग में सफलता प्राप्त होती है लेकिन कभी-कभी इसमें असफल भी रहना होता है।

लेकिन शक्ति का प्रयोग सीमाहीन नहीं होता और इसके ऊपर कई प्रतिबंध होती हैं ।यह प्रतिबंध अनेक बातों से संबंध रखती हैं जैसे इतिहास और परंपराएं ,सहमति या स्वीकृति प्राप्त करने की आवश्यकता के तरीके, राजनीतिक विकास का प्रभाव ,धर्म ,नैतिकता एवं समूह का दबाव इत्यादि ।शक्ति की सीमाएं प्रयोगकर्ता के लक्ष्य एवं उद्देश्य, उसकी क्षमता, पारस्परिक संबंधों ,प्रतियोगिता एवं वातावरण संबंधी कारणों आदि से भी उत्पन्न होती है।

Scanned with CamScanner